Karamate Usmane Ghani (Hindi)

करामाते उ़स्माने ग़नी

رضی اللہ تعالیٰ عنہ

(मअ़ दीगर ह़िकायात)

मज़ारे सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (जन्नतुल बक़ीअ़, मदीनतुल मुनव्वरह)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

करामाते उ़स्माने ग़नी

येह रिसाला (**करामाते उ़स्माने ग़नी**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

करामाते उ़स्माने ग़नी[1] (मअ़ दीगर हिकायात)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप का दिल अ़-ज़-मते सह़ाबा से लबरेज़ हो जाएगा ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : "ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों (या'नी घबराहटों) और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे ।"

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج٥ص٢٧٧ حديث٨١٧٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدينہ

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) कराची में होने वाले (20 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** 1429 सि.हि. 2008 ई. के) सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया जो तरमीम व इज़ाफ़े के साथ त़ब्अ़ किया गया । **-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

पुर असरार मा'ज़ूर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं ने मुल्के शाम की सर ज़मीन में एक आदमी देखा जो बार बार येह सदा लगा रहा था : "हाए अफ़्सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।" मैं उठ कर उस के पास गया तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि उस के दोनों[2] हाथ पाउं कटे हुए हैं, दोनों[2] आंखों से अन्धा है और मुंह के बल ज़मीन पर औंधा पड़ा हुवा बार बार येही कहे जा रहा है : "हाए अफ़्सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।" मैं ने उस से पूछा : ऐ आदमी ! क्यूं और किस बिना पर तू येह कह रहा है ? येह सुन कर उस ने कहा : ऐ शख़्स ! मेरा ह़ाल न पूछ, मैं उन बद नसीबों में से हूं जो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शहीद करने के लिये आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मकान में दाख़िल हो गए थे, मैं जब तलवार ले कर क़रीब पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़ौजए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا मुझे ज़ोर ज़ोर से डांटने लगीं तो मैं ने ग़ुस्से में आ कर बीबी साह़िबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को **थप्पड़** मार दिया ! येह देख कर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह दुआ़ मांगी : "**अल्लाह तआ़ला** तेरे दोनों[2] हाथ और दोनों[2] पाउं काटे, तुझे अन्धा करे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे।" ऐ शख़्स ! अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का पुर जलाल चेहरा देख कर और उन की येह क़ाहिराना दुआ़ सुन कर मेरे बदन का एक एक रूंगटा खड़ा हो गया और मैं ख़ौफ़ से कांपता हुवा वहां से भाग खड़ा हुवा। मैं **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **की चार दुआ़ओं में से तीन की ज़द में आ चुका हूं,** तुम देख ही रहे हो कि मेरे दोनों[2] हाथ

और दोनों[2] पाउं कट चुके और आंखें भी अन्धी हो चुकीं, आह ! अब सिर्फ़ चौथी दुआ या'नी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाक़ी रह गया है ।

(اَلرِّیاضُ النَّضرۃ لِلْمُحِبِّ الطَّبَرِی ج۳ ص۴۱)

दो जहां में दुश्मने उ़स्मां, ज़लीलो ख़्वार है
बा'द मरने के अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है

कुन्यत व अल्क़ाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! 18 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 35 सिने हिजरी को **अल्लाहु** ग़नी عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, मक्की म-दनी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलीलुल क़द्र सह़ाबी उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ निहायत मज़्लूमिय्यत के साथ शहीद किये गए । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ु-लफ़ाए राशिदीन (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) में तीसरे ख़लीफ़ा हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत "अबू अ़म्र" और लक़ब जामिउ़ल कुरआन है नीज़ एक लक़ब "ज़ुन्नूरैन" (दो नूर वाले) भी है, क्यूं कि **अल्लाहु ग़फ़ूर** عَزَّوَجَلَّ के नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी **दो शहज़ादियां** यके बा'द दीगरे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के निकाह़ में दी थीं ।

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का
हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आग़ाज़े इस्लाम ही में क़बूले इस्लाम कर लिया था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को **''साह़िबुल हिज-रतैन''** (या'नी दो हिजरतों वाले) कहा जाता है क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पहले **ह़बशा** और फिर **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई ।

दो बार जन्नत ख़रीदी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शाने वाला बहुत बुलन्दो बाला है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी में नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत, ताजदारे नुबुव्वत, शहन्शाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मर्तबा **जन्नत** ख़रीदी, एक मर्तबा ''बीरे रूमा'' यहूदी से ख़रीद कर मुसल्मानों के पानी पीने के लिये वक़्फ़ कर के और दूसरी बार ''जैशे उ़सरत'' के मौक़अ़ पर । चुनान्चे ''सु-ननेतिरमिज़ी'' में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं बारगाहे न-बवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर था और **हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम,** रसूले मोह़तरम, रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम, **नबिय्ये मुह़तशम**, सरापा जूदो करम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان को ''जैशे उ़सरत'' (या'नी ग़ज़्वए तबूक) की तय्यारी के लिये तरग़ीब इर्शाद फ़रमा रहे थे । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उठ कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! पालान और दीगर मु-तअ़ल्लिक़ा सामान समेत **सो[100] ऊंट** मेरे ज़िम्मे हैं । हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان से फिर तरग़ीबन फ़रमाया । तो ह़ज़रते

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ दोबारा खड़े हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं तमाम सामान समेत **दो सो**200 **ऊंट** ह़ाज़िर करने की ज़िम्मादारी लेता हूं । दो2 जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फिर तरग़ीबन इर्शाद फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं मअ़ सामान **तीन सो**300 **ऊंट** अपने ज़िम्मे क़बूल करता हूं ।

रावी फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हुज़ूरे अन्वर, मदीने के ताजवर, **शाफ़ेए़ मह़शर,** बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर मिम्बरे मुनव्वर से नीचे तशरीफ़ ला कर दो मर्तबा फ़रमाया : "आज से **उ़स्मान** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) जो कुछ करे उस पर मुवा-ख़ज़ा (या'नी पूछगछ) नहीं ।" **(تِرْمِذی ج٥ ص٣٩١ حدیث ٣٧٢٠)**

इमामुल अस्ख़िया ! कर दो अ़त़ा जज़्बा सख़ावत का !
निकल जाए हमारे दिल से ह़ुब्बे दौलते फ़ानी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

950 ऊंट और 50 घोड़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल देखा गया है कि कुछ ह़ज़रात दूसरों की देखा देखी जज़्बात में आ कर चन्दा लिखवा तो देते हैं मगर जब देने की बारी आती है तो उन पर भारी पड़ जाता है ह़त्ता कि बा'ज़ तो देते भी नहीं ! मगर क़ुरबान जाइये मह़बूबे मुस्त़फ़ा, **सय्यिदुल अस्ख़िया,** उ़स्माने बा ह़या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के जूदो सख़ा पर कि आप

رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने ए'लान से बहुत ज़ियादा चन्दा पेश किया चुनान्चे **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत**, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह तो उन का ए'लान था मगर ह़ाज़िर करने के वक़्त आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने 950 ऊंट, 50 घोड़े और 1000 अश्रफ़ियां पेश कीं, फिर बा'द में 10 हज़ार अश्रफ़ियां और पेश कीं। (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं) ख़याल रहे कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने पहली बार में 100 का ए'लान किया, दूसरी बार 100 ऊंट के इ़लावा और 200 का, तीसरी बार और 300 का, कुल 600 ऊंट (पेश करने) का ए'लान फ़रमाया।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 395)

मुझे गर मिल गया बह़रे सख़ा का एक भी क़त़रा
मेरे आगे ज़माने भर की होगी हेच सुल्त़ानी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उमूरे ख़ैर के लिये अ़त़िय्यात जम्अ़ करना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ नादान दीनी कामों के लिये चन्दा करना बुरा जानते और इस से रोकते हैं, याद रखिये ! बिला वजह इस कारे ख़ैर से रोकने की शरअ़न मुमा-न-अ़त है चुनान्चे फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 127 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : उमूरे ख़ैर के लिये मुसल्मानों से इस त़रह़ चन्दा करना बिद्अ़त नहीं बल्कि सुन्नत से साबित है जो लोग

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

इस से रोकते हैं (वोह)[1] مَنَّاعٍ لِّلْخَیْرِ مُعْتَدٍ اَثِیْمٍ ﴿۱۲﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** भलाई से बड़ा रोकने वाला ह़द से बढ़ने वाला गुनहगार) में दाख़िल होते हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से है, कुछ (ह़ज़रात) बरह्ना पा, बरह्ना बदन, सिर्फ़ एक कमली कफ़्नी की त़रह़ चीर कर गले में डाले ख़िदमते अक़्दसे हु़ज़ूरे पुरनूर, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए, हु़ज़ूरे पुरनूर, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की मोह़ताजी (या'नी ग़ुरबत) देखी, चेह्रए अन्वर का रंग बदल गया । बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को अज़ान का हुक्म दिया, बा'दे नमाज़ ख़ुत़्बा फ़रमाया, बा'दे तिलावते आयाते मुबा-रका इर्शाद किया : "कोई शख़्स अपनी अशरफ़ी से स-दक़ा करे, कोई रुपै से, कोई कपड़े से, कोई अपने क़लील (या'नी थोड़े) गेहूं से, कोई अपने थोड़े छुहारों से, यहां तक फ़रमाया : अगर्चे आधा छुहारा ।" इस इर्शादे गिरामी (या'नी अ़तिय्यात देने की तरग़ीब) को सुन कर एक अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रुपियों का थेला उठा लाए जिस के उठाने में उन के हाथ थक गए, फिर लोग पै दर पै स-दक़ात लाने लगे, यहां तक कि दो[2] अम्बार (या'नी 2 ढेर) खाने और कपड़े के हो गए यहां तक कि मैं ने देखा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेह्रए अन्वर ख़ुशी के बाइ़स कुन्दन (या'नी ख़ालिस सोने) की त़रह़ दमक्ने लगा और इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स इस्लाम में कोई अच्छी राह निकाले उस के लिये उस का सवाब है और उस के बा'द जितने लोग उस राह पर अ़मल करेंगे सब का सवाब उस (अच्छी राह निकालने वाले) के लिये है बिग़ैर इस के कि उन (अ़मल करने वालों) के सवाबों में कुछ कमी

۱؎ پ۲۹،القلم:۱۲

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

हो ।'' (مُسلِم ص۵۰۸ حدیث۱۰۱۷) अ़तिय्यात के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की 107 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''चन्दे के बारे में सुवाल जवाब'' का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उ़स्माने ग़नी का इत्तिबाए़ रसूल

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल बल्कि इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का अ़-मली नुमूना थे अपने अक़्वाल व अफ़्आ़ल में मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और अदाएं ख़ूब ख़ूब अपनाया करते थे । चुनान्चे एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मस्जिद के दरवाज़े पर बैठ कर बकरी की दस्ती का गोश्त मंगवाया और खाया और बिग़ैर ताज़ा वुज़ू किये नमाज़ अदा की फिर फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसी जगह बैठ कर येही खाया था और इसी त़रह़ किया था । (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج ۱ ص۱۳۷ حدیث۴۴۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक बार वुज़ू करते हुए मुस्कुराने लगे ! लोगों ने वजह पूछी तो फ़रमाने लगे : मैं ने एक मर्तबा सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी जगह पर वुज़ू फ़रमाने के बा'द मुस्कुराते हुए देखा था । (اَیضاً ص۱۳۰ حدیث۴۱۵ مُلَخّصاً)

वुज़ू कर के ख़न्दां हुए शाहे उ़स्मां कहा : क्यूं तबस्सुम भला कर रहा हूं ?
जवाबे सुवाले मुख़ात़ब दिया फिर किसी की अदा को अदा कर रहा हूं !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़िज़ा में मिसाली सा-दगी

ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़्बील बिन मुस्लिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **अमीरुल मुअमिनीन,** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते और ख़ुद घर जा कर सिर्का और ज़ैतून पर गुज़ारा करते। **(اَلزُّهد لِلامام اَحمد ص١٥٥ حديث٦٨٤)**

कभी सीधा हाथ शर्मगाह को नहीं लगाया

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : जिस हाथ से मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की वोह (या'नी सीधा हाथ) फिर मैं ने कभी भी अपनी शर्मगाह को नहीं लगाया। **(ابن ماجه ج١ص١٩٨ حديث٣١١)**

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने न तो ज़मानए जाहिलिय्यत में कभी बदकारी की और न ही इस्लाम क़बूल करने के बा'द।" **(حلیةُ الاولیاء ج١ص٩٩)**

बन्द कमरे में भी निराली शर्मो ह़या

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शर्मो ह़या की शिद्दत बयान करते हुए फ़रमाया : "अगर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ किसी कमरे में हों और उस का दरवाज़ा भी बन्द हो तब भी नहाने के लिये कपड़े न उतारते और ह़या की वजह से कमर सीधी न करते थे।"

(حِلْیةُ الاولیاء ج ١ ص ٩٤ حديث ١٥٩)

हमेशा रोज़े रखा करते

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

हमेशा नफ़्ली रोज़े रखते और रात के इब्तिदाई हिस्से में आराम फ़रमा कर बक़िय्या रात क़ियाम (या'नी इबादत) करते थे। **(مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبه ج۲ص۱۷۳)**

ख़ादिम को ज़ह़मत नहीं देते

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) का येह ह़ाल था कि रात को तहज्जुद के लिये उठते और कोई बेदार न हुवा होता तो ख़ुद ही वुज़ू का सामान कर लेते और किसी को जगा कर उस की नींद में ख़लल अन्दाज़ न होते। चुनान्चे **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब रात तहज्जुद के लिये उठते तो वुज़ू का पानी ख़ुद ले लेते थे। अ़र्ज़ की गई : आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ क्यूं ज़ह़मत उठाते हैं ख़ादिम को हुक्म फ़रमा दिया करें। फ़रमाया : नहीं रात उन की है इस में आराम करते हैं। **(ابنِ عَساکِر ج۳۹ص۲۳۶)**

लकड़ियों का गट्ठा उठाए चले आ रहे थे !

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक मौक़अ़ पर अपने बाग़ में से लकड़ियों का गट्ठा उठाए चले आ रहे थे ह़ालां कि कई ग़ुलाम भी मौजूद थे। किसी ने अ़र्ज़ की : आप ने येह गट्ठा अपने ग़ुलाम से क्यूं न उठवा लिया ? फ़रमाया : उठवा तो सकता था लेकिन मैं अपने नफ़्स को आज़्मा रहा हूं कि वोह इस से आ़जिज़ तो नहीं या इसे ना पसन्द तो नहीं करता ! **(اَللُّمع ص۱۷۷)**

मैं ने तेरा कान मरोड़ा था

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने एक ग़ुलाम से फ़रमाया : **मैं ने एक मर्तबा तेरा कान मरोड़ा था** इस लिये तू मुझ से उस का बदला ले ले। **(الرِّیاضُ النَّضرة،ج ۳ ص۴۵)**

क़ब्र देख कर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी गिर्या व ज़ारी फ़रमाते

अमीरुल मुअमिनीन, जामिउ़ल कुरआन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ क़त्ई जन्नती होने के बा वुजूद भी **क़ब्र** की ज़ियारत के मौक़अ़ पर आंसू रोक न सकते थे चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 695 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''अल्लाह वालों की बातें''** (जिल्द अव्वल) के सफ़ह़ा 139 पर है : **अमीरुल मुअमिनीन,** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब किसी **क़ब्र** के पास खड़े होते तो इस क़दर **रोते** कि आंसूओं से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की रीश (या'नी दाढ़ी) मुबारक तर हो जाती। (ترمذی ج٤ ص١٣٨ حدیث ٢٣١٥)

.....तो मैं येह पसन्द करूंगा कि राख हो जाऊं

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ''अगर मुझे जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान खड़ा किया जाए लेकिन मुझे येह न पता हो कि मुझे किस त़रफ़ जाने का हुक्म होगा तो मैं येह पसन्द करूंगा कि राख हो जाऊं, इस से पहले कि मुझे किसी त़रफ़ जाने का हुक्म दिया जाए।'' (اَلزُّھد لِلامام اَحمد ص١٥٥ حدیث٦٨٦)

क़त्ई जन्नती होने के बा वुजूद आप ने ख़ौफ़े ख़ुदा से मग़लूब हो कर येह फ़रमाया है। इस इर्शाद में **अल्लाह तआ़ला** की ख़ुफ़्या तदबीर से ख़ौफ़ का इज़्हार है कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे जन्नत के बजाए जहन्नम में जाने का हुक्म दे दिया जाए ! लिहाज़ा अ़ज़ाबे दोज़ख़ के डर के सबब राख हो जाने की पसन्द का इज़्हार फ़रमाया।

काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की
मुस्त़फ़ा के क़दमों से मैं लिपट गया होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 257)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आख़िरत की फ़िक्र दिल में नूर पैदा करती है

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अफ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : दुन्या की फ़िक्र दिल में अंधेरा जब कि आख़िरत की फ़िक्र **नूर** पैदा करती है। **(اَلْمُنَبِّهات ص٤)**

उ़स्माने ग़नी पर करम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक्के मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जामिउ़ल क़ुरआन, हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अफ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर बेह़द व बे इन्तिहा मेहरबान थे, इस ज़िम्न में एक वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जिन दिनों बाग़ियों ने हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मकाने रफ़ीउ़श्शान का मुह़ा-सरा किया हुवा था, उन के घर में पानी की एक बूंद तक नहीं जाने दी जा रही थी और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ प्यास की शिद्दत से तड़पते रहते थे। मैं मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ उस दिन रोज़ादार थे। मुझ को देख कर फ़रमाया : ऐ **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! मैं ने आज रात ताजदारे दो[2] जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान, मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस रोशन-दान में देखा, सुल्त़ाने ज़माना, रसूले यगाना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्तिहाई मुश्फ़िक़ाना लहजे में इर्शाद फ़रमाया : **"ऐ उ़स्मान (** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ **) !** इन लोगों ने पानी बन्द कर के तुम्हें प्यास से बे क़रार कर दिया है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। तो फ़ौरन

ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक डोल मेरी त़रफ़ लटका दिया जो पानी से भरा हुवा था, मैं उस से सैराब हुवा और अब इस वक़्त भी उस पानी की ठन्डक अपनी दोनों छातियों और दोनों[2] कन्धों के दरमियान महसूस कर रहा हूं। फिर हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम, शाफ़ेए़ उमम, सरापा जूदो करम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : **اِنْ شِئْتَ نُصِرْتَ عَلَیْہِمْ وَاِنْ شِئْتَ اَفْطَرْتَ عِنْدَنَا** या'नी "अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो इन लोगों के मुक़ाबले में तुम्हारी इमदाद करूं और अगर तुम चाहो तो हमारे पास आ कर रोज़ा इफ़्तार करो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे पुर अन्वार में ह़ाज़िर हो कर रोज़ा इफ़्तार करना मुझे ज़ियादा अ़ज़ीज़ है । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं इस के बा'द रुख़्सत हो कर चला आया और उसी रोज़ बाग़ियों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को **शहीद** कर दिया ।

(کتابُ المنامات مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا ج۳ ص۷٤ رقم ۱۰۹)

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने बात़ीश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 655 हिजरी) इस से येही समझते हैं कि (सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार वाला) येह वाक़िआ़ ख़्वाब में नहीं बल्कि बेदारी की ह़ालत में पेश आया ।

(الحاوی للفتاوی للسیوطی ج۲ ص۳۱۵)

कई दिन तक रहे मह़सूर उन पर बन्द था पानी
शहादत ह़ज़रते उ़स्मान की बेशक है लासानी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे कसों का सहारा हमारा नबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ब अ़त़ाए परवर दगार عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के तमाम ह़ालात ज़ाहिर व आशकार थे, साथ ही येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बे कसों के मददगार भी हैं जभी तो फ़रमाया : **اِنْ شِئْتَ نُصِرْتَ عَلَيْهِمْ** या'नी "अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो इन लोगों के मुक़ाबले में तुम्हारी इमदाद करूं ।"

ग़मज़दों को रज़ा मुज़्दा दीजे कि है
बे कसों का सहारा हमारा नबी

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ून रेज़ी ना मन्ज़ूर

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के बे मिसाल सब्रो तह़म्मुल पर क़ुरबान ! जामे शहादत तो नोश फ़रमा लिया मगर **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मुसल्मानों का ख़ून बहाना पसन्द न फ़रमाया । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के मकाने आ़लीशान का मुह़ा-सरा हुवा और पानी बन्द कर दिया गया । जां निसारों ने दौलत ख़ाने पर ह़ाज़िर हो कर बल्वाइयों से मुक़ाबले की इजाज़त चाही मगर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इजाज़त देने से इन्कार फ़रमा दिया और जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ग़ुलाम हथियारों से लेस हो कर इजाज़त के लिये ह़ाज़िर हुए तो फ़रमाया : अगर तुम लोग मेरी ख़ुशनूदी चाहते हो तो हथियार खोल दो

और सुनो ! तुम में से जो भी गु़लाम हथियार खोल देगा मैं ने उस को आज़ाद किया । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! ख़ून रेज़ी से पहले मेरा क़त्ल हो जाना मुझे ज़ियादा मह़बूब है ब मुक़ाबला इस के कि मैं ख़ून रेज़ी के बा'द क़त्ल किया जाऊं[1] या'नी मेरी शहादत लिख दी गई है और नबिय्ये ग़ैबदान, रसूले ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस की बिशारत दे दी है । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने गु़लामों से फ़रमाया : "अगर तुम ने जंग की फिर भी मेरी शहादत हो कर रहेगी ।" (تحفۂ اثنا عشریہ ص۳۲۷)

जो दिल को ज़िया दे जो मुक़द्दर को जिला दे
वोह जल्वए दीदार है उ़स्माने ग़नी का

ह़-सनैने करीमैन ने पहरा दिया

मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, शेरे ख़ुदा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बेह़द मह़ब्बत करते थे । ह़ालात की नाज़ुकी देख कर आप ने अपने दोनों[2] शहज़ादों **ह़-सनैने करीमैन** या'नी इमामे ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से फ़रमाया : "तुम दोनों[2] अपनी अपनी तलवारें ले कर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरवाज़े पर जाओ और पहरा दो ।" क़ज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ जब ग़ालिब आई ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **शहादत** हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को सख़्त सदमा हुवा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा ।

[1] نِہایۃُ الارَب فِی فُنونِ الادب لِلنّویری ج۳ص۷

ख़ुदा भी और नबी भी ख़ुद अ़ली भी उस से हैं नाराज़
अ़दू उन का उठाएगा क़ियामत में परेशानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 497)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुस्ताख़ बन्दर बन गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से बुग़्ज़ो अ़दावत रखना दारैन (या'नी दुन्या व आख़िरत) में नुक़्सान व ख़ुसरान का सबब है चुनान्चे ह़ज़रते आ़रिफ़ **बिल्लाह** सय्यिदुना नूरुद्दीन **अ़ब्दुर्रह़मान** जामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی अपनी मश्हूर किताब "**शवाहिदुन्नुबुव्वत**" में नक़्ल करते हैं **3 अफ़राद** यमन के सफ़र पर निकले उन में एक कूफ़ी (या'नी कूफ़े का रहने वाला) था जो शैख़ैने करीमैन (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का गुस्ताख़ था, उसे समझाया गया लेकिन वोह बाज़ न आया। जब येह तीनों यमन के क़रीब पहुंचे तो एक जगह क़ियाम किया और सो गए। जब कूच का वक़्त आया तो उन में से उठ कर दो[2] ने वुज़ू किया और फिर उस गुस्ताख़ कूफ़ी को जगाया। वोह उठ कर कहने लगा : अफ़्सोस ! मैं तुम से इस मन्ज़िल में पीछे रह गया हूं, तुम ने मुझे ऐ़न उस वक़्त जगाया जब शहन्शाहे अ़–जमो अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा हो कर इर्शाद फ़रमा रहे थे : "ऐ फ़ासिक़ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ासिक़ को ज़लीलो ख़्वार करता है, इसी सफ़र में तेरी शक्ल बदल जाएगी।" जब वोह **गुस्ताख़** वुज़ू के लिये बैठा तो उस के पाउं की उंग्लियां मस्ख़ होना (या'नी बिगड़ना) शुरूअ़ हो गईं, फिर उस के दोनों[2] पाउं बन्दर के पाउं के मुशाबेह़ हो गए, फिर घुटनों तक बन्दर की त़रह़ हो गया, **यहां तक कि उस का**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सारा बदन बन्दर की त़रह़ बन गया। उस के रु-फ़क़ा ने उस बन्दर नुमा गुस्ताख़ को पकड़ कर ऊंट के पालान के साथ बांध दिया और अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये। ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त वोह एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां कुछ **बन्दर** जम्अ़ थे, जब इस ने उन को देखा तो मुज़्त़रिब (या'नी बेताब) हो कर रस्सी छुड़ाई और उन में जा मिला। फिर सभी बन्दर इन दोनों के क़रीब आए तो येह ख़ाइफ़ (या'नी ख़ौफ़ज़दा) हो गए मगर उन्हों ने इन को कोई अज़िय्यत न दी और वोह **बन्दर** नुमा गुस्ताख़ इन दोनों के पास बैठ गया और इन्हें देख देख कर आंसू बहाता रहा। एक घन्टे के बा'द जब **बन्दर** वापस गए तो वोह भी उन के साथ ही चला गया। **(شَواھِدُ النُّبُوَّة،ص۲۰۳)**

हम उन की याद में धूमें मचाएंगे क़ियामत तक
पड़े हो जाएं जल कर ख़ाक सब आ'दाए उ़स्मानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 498)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा ! शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہُما का गुस्ताख़ बन्दर बन गया। किसी किसी को इस त़रह़ दुन्या में भी सज़ा दे कर लोगों के लिये इ़ब्रत का नुमूना बना दिया जाता है ताकि लोग डरें, गुनाहों और गुस्ताख़ियों से बाज़ आएं। **अल्लाह तआ़ला** हम को सह़ाबए किराम और अहले बैते इ़ज़ाम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत करने वालों में रखे।

हम को अस्ह़ाबे नबी से प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰہ ***अपना बेड़ा पार है***
हम को अहले बैत से भी प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰہ ***अपना बेड़ा पार है***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ईमान पर ख़ातिमा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **सरकारे** वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक फ़ितने का ज़िक्र किया और ह़ज़रते उ़स्मान के लिये फ़रमाया कि येह उस में ज़ुल्मन **शहीद** कर दिये जाएंगे। **(ترمذی ج۵ص۳۹۵ حدیث۳۷۲۸)**

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत**, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस इर्शाद में चन्द ग़ैबी ख़बरें हैं ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) के इन्तिक़ाल की तारीख़, आप की वफ़ात की जगह, आप की वफ़ात की नौइय्यत कि शहीद हो कर होगी आप का **ईमान पर ख़ातिमा** क्यूं कि शहादत के लिये इस्लाम पर मौत ज़रूरी है, येह है हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का इल्मे ग़ैब। (मुलख़्ख़स अज़ मिरआत, जि. 8, स. 403)

जिस आईने में नूरे इलाही नज़र आए
वोह आईना रुख़्सार है उ़स्माने ग़नी का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद निगाही का मा'लूम हो गया

ह़ज़रते अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुब्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपनी किताब **"त़बक़ात"** में लिखते हैं कि एक शख़्स ने सरे राह किसी औ़रत को ग़लत़ निगाहों से देखा फिर जब वोह अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमते बा अ़-ज़मत में ह़ाज़िर हुवा तो ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फ़रमाया : तुम लोग ऐसी ह़ालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में ज़िना के अ-सरात होते हैं ! उस शख़्स ने कहा कि क्या **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द अब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर वह़्य उतरने लगी है ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को येह कैसे मा'लूम हो गया कि मेरी आंखों में ज़िना के अ-सरात हैं ? इर्शाद फ़रमाया : "मुझ पर वह़्य तो नाज़िल नहीं होती लेकिन मैं ने जो कुछ कहा बिल्कुल सच्ची बात है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ऐसी फ़िरासत (नूरानी बसीरत) इनायत फ़रमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के ह़ालात व ख़याालात जान लेता हूं।" (طَبَقاتُ الشّافِعِیّة الکُبرٰی لِلسُّبْکی ج۲ ص۳۲۷وغیرہ)

आंखों में पिघला हुवा सीसा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अहले बसीरत और साह़िबे बात़िन थे लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी निगाहे करामत से उस शख़्स की आंखों से की जानी वाली मा'सियत मुला-ह़ज़ा फ़रमा ली और उस की आंखों को ज़िनाकार क़रार दिया। बेशक **अज्नबिय्या** या'नी ना मह़रमा कि जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो उस की त़रफ़ बिला इजाज़ते शर-ई नज़र करना बहुत बड़ी जुरअत है। मन्क़ूल है : **"जो शख़्स शह्वत से किसी अज्नबिय्या के ह़ुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।"** (ہدایہ ج ٤ ص٣٦٨)

मुख़्तलिफ़ आ'ज़ा का ज़िना

मक्के मदीने के ताजदार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "आंखों का ज़िना देखना, कानों का ज़िना सुनना, ज़बान का ज़िना बोलना, हाथों का ज़िना पकड़ना और पाउं का ज़िना जाना है।" (مُسلِم ص۱۴۲۸ حدیث ۲۱۔(۲۶۵۷))

मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : आंखों का ज़िना बद निगाही, कानों का ज़िना ह़राम व फ़ोह़्श बातों का सुनना, ज़बान का ज़िना ह़राम व बे ह़याई की गुफ़्त-गू और पाउं का ज़िना बुरे काम की त़रफ़ जाना है। (اشعة اللّمعات ج۱ ص ۱۰۰)

आंखों में आग भर दी जाएगी

बद निगाही से बचना बेह़द ज़रूरी है वरना ख़ुदा की क़सम ! अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। मन्क़ूल है : "जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी।" (مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب ص۱۰)

आग की सलाई

फ़िल्में डिरामे देखने वालों, ना मह़रमों और अम्रदों के साथ बद निगाही करने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है, सुनो ! सुनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल करते हैं : औ़रत के मह़ासिन (या'नी ह़ुस्नो जमाल) को देखना इब्लीस के ज़ह्र में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना मह़रम से आंख की ह़िफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोज़े क़ियामत **आग की सलाई** फेरी जाएगी। (بَحرُ الدُّمُوع ص۱۷۱)

नज़र दिल में शह्वत का बीज बोती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आंखों की हिफ़ाज़त की हर दम तरकीब रखिये, इन को आज़ाद मत छोड़िये वरना येह हलाकत के गहरे ग़ार में झोंक सकती हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपनी नज़र की हिफ़ाजत़ करो क्यूं कि येह दिल में शह्वत का बीज बोती है और फ़ितने के लिये येही काफ़ी है।'' (اِحیاءُ العلوم ج۳ ص۱۲۶) **नबी इब्ने नबी** ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या बिन ज़-करिय्या عَلَيْهِمَاالصَّلٰوةُوَالسَّلَام से पूछा गया : ज़िना की इब्तिदा क्या है ? फ़रमाया : ''देखना और ख़्वाहिश करना।'' (اَیضاً)

पारह 18 **सू-रतुन्नूर** आयत नम्बर 30 में **अल्लाहु रब्बुल इ़बाद** का इर्शादे आ़फ़िय्यत बुन्याद है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है, बेशक **अल्लाह** को उन के कामों की ख़बर है।

करामत की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **साहिबे करामत सह़ाबी** थे, जभी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस शख़्स को बद निगाही पर तम्बीह फ़रमाई। **करामत** क्या है ? इस बारे में बल्कि इरहास, मऊ़नत, इस्तिद्राज और इहानत की भी **ता'रीफ़ात** समझ लीजिये चुनान्चे मक-त-बतुल

मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 58 पर लिखा है : ''नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत क़ब्ले नुबुव्वत ज़ाहिर हो, उस को **इरहास** कहते हैं और वली से जो ऐसी बात सादिर हो उस को **करामत** कहते हैं और आ़म मुअमिनीन से जो सादिर हो, उसे **मऊ़नत** कहते हैं और बेबाक फ़ुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो, उस को **इस्तिद्राज** कहते हैं और उन के ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो तो **इहानत** है।''

उ़लूए शान का क्यूंकर बयां हो ऐ मेरे प्यारे
ह़या करती है तेरी तो शहा मख़्लूक़े नूरानी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपने मदफ़न की ख़बर दे दी !

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَلِک फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक मर्तबा **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के क़ब्रिस्तान ''जन्नतुल बक़ीअ़'' के उस ह़िस्से में तशरीफ़ ले गए जो ''**ह़श्शे कौकब**'' कहलाता था, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वहां एक जगह पर ख़ड़े हो कर फ़रमाया : ''अ़न्क़रीब यहां एक शख़्स दफ़्न किया जाएगा।'' चुनान्चे इस के थोड़े ही अ़र्से बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शहादत हो गई और बाग़ियों ने जनाज़ए मुबा-रका के साथ इस क़दर ऊधम बाज़ी की, कि न रौज़ए मुनव्वरह के क़रीब दफ़्न किया जा सका न जन्नतुल बक़ीअ़ के उस ह़िस्से में मदफ़ून किये जा सके जो सह़ाबए किबार (या'नी बड़े सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का क़ब्रिस्तान था बल्कि सब से दूर अलग थलग ''**ह़श्शे कौकब**'' में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सिपुर्दे ख़ाक किये गए जहां कोई सोच भी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

नहीं सकता था क्यूं कि उस वक़्त तक वहां कोई क़ब्र ही न थी।

(करामाते सह़ाबा, स. 96, اَلرِّيا ضُ النَّضرة ،ج٣ص٤١وغيره)

अल्लाह से क्या प्यार है उ़स्माने ग़नी का
मह़बूबे ख़ुदा यार है उ़स्माने ग़नी का

(ज़ौक़े ना'त)

शहादत के बा'द ग़ैबी आवाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ का बयान है : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ की शहादत के दिन मैं ने अपने कानों से सुना कि कोई बुलन्द आवाज़ से कह रहा है : **اَبۡشِرِ ابۡنَ عَفَّانَ بِرَوۡحٍ وَّرَيۡحَانٍ وَّبِرَبٍّ غَيۡرِ غَضۡبَانَ ط اَبۡشِرِ ابۡنَ عَفَّانَ بِغُفۡرَانٍ وَرِضۡوَانٍ.** (या'नी ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ को राह़त और ख़ुश्बू की ख़ुश ख़बरी दो और नाराज़ न होने वाले रब عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात की ख़बरे फ़रह़त आसार दो और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ग़ुफ़रान व रिज़्वान (या'नी बख़्शिश व रिज़ा) की भी बिशारत दो) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ फ़रमाते हैं कि मैं इस आवाज़ को सुन कर इधर उधर नज़र दौड़ाने लगा और पीछे मुड़ कर भी देखा मगर मुझे कोई शख़्स नज़र नहीं आया।

(ابن عساكر ج٣٧ص٣٥٥،شَوا هِدُ النُّبُوَّة ،ص٢٠٩)

अल्लाहु ग़नी ह़द नहीं इन्आ़मो अ़त़ा की
वोह फ़ैज़ पे दरबार है उ़स्माने ग़नी का

(ज़ौक़े ना'त)

मदफ़न में फ़िरिश्तों का हुजूम

रिवायत है कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ का जनाज़ए मुबा-रका चन्द जां निसार रात की तारीकी में उठा कर जन्नतुल बक़ीअ़ पहुंचे, अभी क़ब्र

शरीफ़ खोद रहे थे कि अचानक सुवारों की एक बहुत बड़ी ता'दाद जन्नतुल बक़ीअ़ में दाख़िल हुई उन को देख कर येह ह़ज़रात ख़ौफ़ज़दा हो गए। सुवारों ने ब आवाज़े बुलन्द कहा : आप ह़ज़रात बिल्कुल मत डरिये हम भी इन की तदफ़ीन में शिर्कत के लिये ह़ाज़िर हुए हैं। येह आवाज़ सुन कर लोगों का ख़ौफ़ दूर हो गया और इत़्मीनान के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की तदफ़ीन की गई। क़ब्रिस्तान से लौट कर उन सह़ाबियों (عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) ने क़सम खा कर लोगों से कहा कि यक़ीनन येह फ़िरिश्तों का गुरौह था।

(करामाते सह़ाबा, स. 99, شَواهِدُ النُّبُوَّة،ص۲۰۹ مُلَخَّصاً)

रुक जाएं मेरे काम ह़सन हो नहीं सकता
फ़ैज़ान मददगार है उ़स्माने ग़नी का

(ज़ौक़े ना'त)

गुस्ताख़ को दरिन्दे ने फाड़ डाला

मन्क़ूल है कि ह़ाजियों का एक क़ाफ़िला **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا ह़ाज़िर हुवा। तमाम अहले क़ाफ़िला ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के मज़ारे पुर अन्वार के दीदार के लिये गए लेकिन एक गुस्ताख़ तौहीन व इहानत के त़ौर पर ज़ियारत के लिये नहीं गया और यूं बहाना बनाया कि मज़ार बहुत दूर है। क़ाफ़िला जब अपने वत़न को वापस आ रहा था तो **रास्ते में एक ख़ौफ़नाक दरिन्दा ग़ुर्राता हुवा उस गुस्ताख़ पर ह़म्ला आवर हुवा और उस ने उसे चीर फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला !** येह लरज़ा ख़ैज़ मन्ज़र देख कर तमाम अहले क़ाफ़िला ने ब-यक ज़बान कहा कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी

(شَواهِدُ النُّبُوَّة ، ص ٢١٠) رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की गुस्ताख़ी का अन्जाम है।

बीमार है जिस को नहीं आज़ारे मह़ब्बत
अच्छा है जो बीमार है उ़स्माने ग़नी का

(ज़ौक़े ना'त)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ कितने बुलन्द पाया सह़ाबी हैं। यहां कोई येह न समझे कि सिर्फ़ मज़ारे पुर अन्वार के दीदार के लिये न जाने की वजह से वोह शख़्स हलाक हुवा, बल्कि बात येह थी कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का गुस्ताख़ था और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से दिल में दुश्मनी रखने की वजह से ह़ाज़िर न हुवा था।

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने म-दनी ऑपरेशन फ़रमाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم और सह़ाबए किराम और अहले बैते इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की उल्फ़त व मह़ब्बत व प्यार के ह़ुसूल के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये, नीज़ दुआ़ओं की क़बूलिय्यत और सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये और न सिर्फ़ तन्हा बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों पर भी **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें भी **म-दनी क़ाफ़िले** के लिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

तय्यार कीजिये। आइये ! म-दनी क़ाफ़िले की एक महकी महकी **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे एक आ़शिक़े रसूल का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूं : हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** "नाका खारड़ी" (बलोचिस्तान, पाकिस्तान) में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये ह़ाज़िर हुवा था, **म-दनी क़ाफ़िले** के एक मुसाफ़िर के सर में चार छोटी छोटी गांठें हो गई थीं जिन के सबब उन को आधा सीसी (या'नी आधे सर) का शदीद दर्द हुवा करता था, जब दर्द उठता तो दर्द की त़रफ़ वाले चेहरे का ह़िस्सा सियाह पड़ जाता और वोह तक्लीफ़ के सबब इस क़दर तड़पते कि देखा न जाता। एक रात इसी त़रह़ वोह दर्द से तड़पने लगे हम ने गोलियां खिला कर उन को सुला दिया। सुब्ह़ उठे तो हश्शाश बश्शाश थे। उन्हों ने बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर करम हो गया, मेरे ख़्वाब में **सरकारे रिसालत मआब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मअ़ चार यार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان करम फ़रमाया। **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी जानिब इशारा करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "इस का दर्द ख़त्म कर दो।" चुनान्चे यारे ग़ार व यारे मज़ार सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मेरा इस त़रह़ **म-दनी ऑपरेशन** किया कि मेरा सर खोल दिया और मेरे दिमाग़ में से चार काले दाने निकाले और फ़रमाया : "बेटा ! अब तुम्हें कुछ नहीं होगा।" म-दनी बहार के रावी का कहना है : वाक़ेई वोह इस्लामी भाई बिल्कुल तन्दुरुस्त हो चुके थे। सफ़र से वापसी पर उन्हों ने दोबारा "चेकअप" करवाया, डॉक्टर ने ह़ैरान हो कर कहा : भाई कमाल है, तुम्हारे दिमाग़ के चारों दाने ग़ाइब हो चुके हैं ! इस पर उस ने रो रो कर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की

ब-र-कत और ख़्वाब का तज़्किरा किया। डॉक्टर बहुत मु-तअस्सिर हुवा। उस अस्पताल के डॉक्टर समेत वहां मौजूद 12 आफ़्राद ने 12 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की **निय्यतें** लिखवाईं और बा'ज़ डॉक्टर्ज़ ने अपने चेहरे पर हाथों हाथ सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक सजाने की निय्यत की।

है नबी की नज़र, क़ाफ़िले वालों पर आओ सारे चलें, क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें, क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल), स. 45 ब तग़य्युरे क़लील)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **महब्बत** की उस ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। **(اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)**

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"हाथ मिलाना सुन्नत है" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से हाथ मिलाने के 14 म-दनी फूल

﴾1﴿ दो मुसल्मानों का ब वक़्ते मुलाक़ात दोनों हाथों से **मुसा-फ़ह़ा** करना या'नी दोनों **हाथ मिलाना** सुन्नत है ﴾2﴿ हाथ मिलाने

से पहले **सलाम** कीजिये ﴾3﴿ रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और (साथ में) हाथ भी मिला सकते हैं ﴾4﴿ नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है **:** "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हुए **मुसा-फ़हा** करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान **सो रह़मतें** नाज़िल फ़रमाता है जिन में से **निनानवे रह़मतें** ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।"[1] ﴾5﴿ हाथ मिलाने के दौरान **दुरूद शरीफ़** पढ़िये हाथ जुदा होने से पहले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ﴾6﴿ हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ भी पढ़ लीजिये **:** "يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَ لَكُمْ" (या'नी **अल्लाह तआ़ला** हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) ﴾7﴿ दो मुसल्मान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ मांगेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **क़बूल** होगी और हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ﴾8﴿ आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है ﴾9﴿ मुसल्मान को **सलाम** करने, **हाथ मिलाने** बल्कि मह़ब्बत के साथ उस का **दीदार** करने से भी सवाब मिलता है। ह़दीसे पाक में है **:** जो कोई अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ मह़ब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे[2] ﴾10﴿ जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं ﴾11﴿ आज कल बा'ज़ लोग दोनों त़रफ़ से एक हाथ मिलाते बल्कि सिर्फ़ उंग्लियां ही आपस में टकरा देते हैं येह सब ख़िलाफ़े सुन्नत है ﴾12﴿ हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ **चूम** लेना मक्रूह है।[3] (हाथ मिलाने के बा'द

مدینہ

[1] اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٥ ص ٣٨٠ حدیث ٧٦٧٢۔ [2] ایضاً ج٦ ص١٣١ حدیث ٨٢٥١۔

3. बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 472

अपना ही हाथ चूम लेने वाले इस्लामी भाई अपनी आ़दत निकालें) हां अगर किसी बुज़ुर्ग से हाथ मिलाने के बा'द हुसूले ब-र-कत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो कराहत नहीं, जैसा कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर किसी से मुसा-फ़ह़ा किया फिर ब-र-कत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो मुमा-न-अ़त की कोई वजह नहीं जब कि जिस से हाथ मिलाए वोह उन हस्तियों में से हो जिन से ब-र-कत ह़ासिल की जाती हो[1] ﴾13﴿ अगर **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से (या किसी भी मर्द से) हाथ मिलाने में शह्वत आती हो तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शह्वत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है[2] ﴾14﴿ **मुसा-फ़ह़ा** करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रुमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।[3]

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हि़स्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो   सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो   ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدينه

۱ جَدُّ المُمتار، كتابُ الحظر وَالإباحة، مقوله ۴۵۵۱، غير مطبوعه- ۲ دُرِّمُختار ج ۲ ص۹۸۔
3. बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 471

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

एक चुप सो सुख [100]

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

11 जुमादल उख़रा 1434 सि.हि.
22-04-2013

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बे कसों का सहारा हमारा नबी	14
पुर असरार मा'ज़ूर	2	ख़ून रेज़ी ना मन्ज़ूर	14
कुन्यत व अल्क़ाब	3	ह़-सनैने करीमैन ने पहरा दिया	15
दो बार जन्नत ख़रीदी	4	गुस्ताख़ बन्दर बन गया	16
950 ऊंट और 50 घोड़े	5	ईमान पर ख़ातिमा	18
उमूरे ख़ैर के लिये इ़ज्तिमाअ़ करना सुन्नत है	6	बद निगाही का मा'लूम हो गया	18
उ़स्माने ग़नी का इत्तिबाए़ रसूल	8	आंखों में पिघला हुवा सीसा	19
गिज़ा में मिसाली सा-दगी	9	मुख़्तलिफ़ आ'ज़ा का ज़िना	20
कभी सीधा हाथ शर्मगाह को नहीं लगाया	9	आंखों में आग भर दी जाएगी	20
बन्द कमरे में भी निराली शर्मो ह़या	9	आग की सलाई	20
हमेशा रोज़े रखा करते	9	नज़र दिल में शह्वत का बीज बोती है	21
ख़ादिम को ज़ह़मत नहीं देते	10	करामत की ता'रीफ़	21
लकड़ियों का गठ्ठा उठाए चले आ रहे थे !	10	अपने मदफ़न की ख़बर दे दी !	22
मैं ने तेरा कान मरोड़ा था	10	शहादत के बा'द ग़ैबी आवाज़	23
क़ब्र देख कर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी गिर्या व ज़ारी फ़रमाते	11	मदफ़न में फ़िरिश्तों का हुजूम	23
...तो मैं येह पसन्द करूंगा कि राख हो जाऊं	11	गुस्ताख़ को दरिन्दे ने फाड़ डाला	24
आख़िरत की फ़िक्र दिल में नूर पैदा करती है	12	सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने म-दनी ओपरेशन फ़रमाया	25
उ़स्माने ग़नी पर करम	12	हाथ मिलाने के 14 म-दनी फूल	27

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بحر الدموع	دار الفجر دمشق
مسلم	دار ابن حزم بیروت	المنبہات	پشاور
ترمذی	دار الفکر بیروت	شواہد النبوّۃ	استنبول
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	جامع کرامات الاولیاء	مرکز اہل سنت برکات رضا، الھند
مسند امام احمد بن حنبل	دار الفکر بیروت	حجۃ اللّٰہ علی العالمین	مرکز اہل سنت برکات رضا، الھند
مصنف ابن ابی شیبۃ	دار الفکر بیروت	نہایۃ الارب فی فنون الادب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الھدایۃ	دار احیاء التراث العربی بیروت
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	درّ مختار	دار المعرفۃ بیروت
الفردوس بمأثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الرّیاض النضرۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	جدّ الممتار	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
ابن عساکر	دار الفکر بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
کتاب المنامات	المکتبۃ العصریۃ بیروت	اشعۃ اللّمعات	کوئٹہ
الزھد	دار الغد الجدید بیروت	مراٰۃ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
اللّمع	دار الکتب الحدیث مصر	تحفۂ اثنا عشریہ	دہلی
احیاء العلوم	دار صادر بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کرامات صحابہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बे रोज़गारी दूर करने का अ़मल

"یَامُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ" 500 बार, अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार, बा'द नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुज़ू नंगे सर ऐसी जगह पढ़िये कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो, यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो। इस्लामी बहनें येह एह़तियात़ लाज़िमन करें कि किसी अजनबी या'नी ग़ैर मह़रम की नज़र न पड़े।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net